Patrika (Indore), 17th September 2025, Page-14

किसानों तक तकनीक पहुंचे, तभी असली भूमिका पूरी होगी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. कृषि और प्रौद्योगिकी को जोड़ने और किसानों तक नई तकनीक पहुंचाने के लिए आइआइटी इंदौर में मंगलवार को दो दिवसीय कार्यशाला 'एग्रीकनेक्ट' की शुरुआत हुई। यह कार्यशाला आइआइटी इंदौर, आइसीएआर-एनएसआरआइ इंदौर, आइसीएआर-सीआइएई भोपाल और सी-डैक पुणे द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही है। इसे इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग मध्यप्रदेश से वित्तीय सहयोग दिया जा रहा है।

मुख्य अतिथि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय नई दिल्ली के संयुक्त सचिव केके सिंह मौजूद रहे। उन्होंने कहा, तकनीक की असली भूमिका तभी पूरी होगी, जब इसका फायदा सीमांत और छोटे किसानों तक पहुंचे। एग्रीहब को देशभर में नवाचार का मॉडल बनाने में मंत्रालय सहयोग करेगा। इस अवसर पर डिजिटल एग्रीकल्चर, कृषि मंत्रालय के निदेशक रवि रंजन सिंह, वैज्ञानिक लक्ष्मी पनत, आइसीएआर-एनएसआरआइ के निदेशक डॉ. कुंवर हरेंद्र सिंह ने कहा कि डिजिटल तकनीक, एआइ, ड्रोन और बिग डेटा एनालिटिक्स के जरिए कृषि क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

तकनीक बनाना ही नहीं, हर किसान तक पहुंचाना भी जरूरी

आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने कहा, एग्रीकनेक्ट कार्यशाला प्रमाण है कि संस्थान जमीनी स्तर पर काम आने वाले तकनीकी नवाचारों को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सिर्फ तकनीक बनाना ही नहीं, बल्कि उसे हर किसान तक पहुंचाना भी जरूरी है। कृषि क्षेत्र में डिजिटल तकनीकों, एआइ/एमएल, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स का इस्तेमाल बढ़ाना, तकनीक पहुंचाने के लिए समावेशी मॉडल तैयार करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

दो दिन राउंडटेबल बैठकें कर देंगे जानकारी

एग्रीहब की प्रमुख अन्वेषक प्रोफेसर अरुणा तिवारी ने बताया, अगले दो दिनों में विशेषज्ञ वार्ता, नवाचार प्रदर्शन, उद्योग के दृष्टिकोण और हितधारक राउंडटेबल बैठकों का आयोजन होगा। इनमें फसल सुधार, सटीक कृषि, ड्रोन उपयोग, छवि विश्लेषण और एआइ आधारित रोग व कीट निदान जैसे विषय शामिल रहेंगे। इसमें किसानों को तकनीकी जानकारी देने के लिए जागरुकता अभियान चलाने पर भी बात की जाएगी।